Tripuri
A Multidisciplinary and Multilingual Double-Blind Peer-Reviewed International Research Journal
TRIPURI

डॉ. गुलजारीलाल नंदा के जीवन में राष्ट्रीय आंदोलन

भगत सिंह उईके[1], डॉ सुभाष चंद्र शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग
मोबाईल नंबर- 8770904967
[2]विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
रानी दुर्गवाती विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश

सारांश

डॉ गुलजारी लाल नन्दा के प्रारंभिक जीवन के अनुभव, नैतिक शिक्षा, और समाज में व्याप्त समस्याओं के प्रति उनकी जागरूकता ने उनके राजनीतिक जीवन की नींव रखी। उनका व्यक्तित्व, जिसमें ईमानदारी, निष्ठा, और समाज के प्रति समर्पण का भाव था, उन्हें एक कुशल और आदर्श नेता के रूप में प्रस्तुत करता है। सामाजिक और आर्थिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और नेतृत्व क्षमता ने उन्हें भारतीय राजनीति में एक विशेष स्थान दिलाया। उनके कार्य आज भी उनके योगदान और नेतृत्व की विरासत को जीवंत रखते हैं, जो उन्हें एक महान समाज सुधारक और नेता के रूप में स्मरणीय बनाते हैं। यह शोध पत्र में उनके जीवन, राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भागीदारी और उनके योगदान का विश्लेषण किया गया है।

कूट शब्द- डॉ गुलजारी लाल नन्दा, जीवन परिचय, नैतिक शिक्षा, अर्थशास्त्री और समाज सुधारक।

प्रस्तावना

गुलजारीलाल नंदा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक कर्मठ नेता, समाज सुधारक और प्रखर अर्थशास्त्री थे। भारतीय राजनीति में अपनी सादगी, ईमानदारी और निस्वार्थ सेवा भावना के लिए जाने जाते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी अहम भूमिका रही और स्वतंत्र भारत में उन्होंने अस्थायी रूप से भारत के प्रधानमंत्री के रूप में भी कार्य किया।

गुलजारीलाल नंदा का जीवन परिचय

गुलजारीलाल नंदा (जन्म 4 जुलाई, 1898, सियालकोट, पंजाब, ब्रिटिश भारत [अब पाकिस्तान में] - मृत्यु 15 जनवरी, 1998, अहमदाबाद, गुजरात, भारत) एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे[1] जिन्होंने दो बार अंतरिम प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया, 1964 में जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद और 1966 में लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद। नंदा उन दोनों प्रधानमंत्रियों के मंत्रिमंडल के सदस्य थे, जिनके वे उत्तराधिकारी बने, और वे श्रम मुद्दों पर अपने काम के लिए जाने जाते थे।[2] नंदा पंजाब में पले-बढ़े और

[1] वर्मा, एस.पी. (2010). *भारतीय राजनीति के प्रमुख नेता*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[2] https://www.britannica.com/biography/Gulzarilal-Nanda.

लाहौर, आगरा और इलाहाबाद में शिक्षित हुए। उन्होंने बॉम्बे (अब मुंबई) में नेशनल कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बनने से पहले 1920-21 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में श्रम समस्याओं पर शोध किया। वे महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में शामिल हुए और सविनय अवज्ञा के लिए दो बार जेल गए। वह एक साधारण परिवार से थे और प्रारंभ से ही शिक्षा एवं समाजसेवा के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने लाहौर, आगरा और इलाहाबाद विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त की।

नंदा 1937 में बॉम्बे विधान सभा के लिए चुने गए, जहाँ उन्होंने श्रम और उत्पाद शुल्क (1937-39) के लिए संसद सचिव और बॉम्बे के श्रम सचिव (1946-50) के रूप में कार्य किया। बाद की क्षमता में, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (और बाद में इसके अध्यक्ष बने) के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और 1947 में उन्होंने जिनेवा, स्विट्जरलैंड में अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ वे इसकी स्वतंत्रता संघ समिति के सदस्य थे। नंदा ने भारत सरकार में कई कैबिनेट पदों पर कार्य किया। उन्हें 1951 में योजना मंत्री नामित किया गया था, और अगले वर्ष, लोकसभा (विधान सभा) के लिए चुने जाने के बाद, उन्हें सिंचाई और बिजली का पोर्टफोलियो भी दिया गया था। 1957 में वे श्रम, रोजगार और योजना मंत्री बने। उन्होंने अंतरिम प्रधान मंत्री के रूप में बुलाए जाने के अलावा श्रम और रोजगार मंत्री (1962-63) और गृह मामलों के मंत्री (1963-66) के रूप में भी कार्य किया। बाद में वे रेल मंत्री (1970-71) बने। 1997 में नंदा को भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

प्रारम्भिक कार्य अनुभव

डॉ. गुलजारीलाल नंदा ने अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत बंबई विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में की। इस भूमिका में नंदा ने न केवल अकादमिक ज्ञान का प्रसार किया, बल्कि छात्रों को सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के प्रति जागरूक भी किया। उन्होंने छात्रों में सामाजिक न्याय, समानता और राजनीतिक चेतना के प्रति रुचि पैदा की, जो उनके शिक्षण का मुख्य उद्देश्य था। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य समाज में व्यापक बदलाव लाने और छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में होना चाहिए (शर्मा, 1989, पृ. 134)।

इस शैक्षणिक अनुभव ने डॉ. नंदा के विचारों में सामाजिक न्याय की गहरी नींव रखी। उन्होंने अपने शिक्षण के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों के प्रति छात्रों की संवेदनशीलता को प्रोत्साहित किया। उनके शिक्षण के दौरान उन्होंने अपने छात्रों में न केवल अकादमिक उत्कृष्टता विकसित की, बल्कि उन्हें समाज के प्रति जिम्मेदारी और सामाजिक सुधार के लिए प्रेरित किया (देसाई, 1995, पृ. 78)।

यह शैक्षणिक पृष्ठभूमि नंदा के लिए आगे के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण रही, क्योंकि इसने उन्हें समाज में अन्याय और असमानता के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जागरूकता फैलाने का उनका प्रयास, उनके राजनीतिक और सामाजिक विचारों का मुख्य आधार बना। बंबई विश्वविद्यालय में उनके शुरुआती अनुभवों ने नंदा को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और श्रमिक आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया (गुप्ता, 2001, पृ. 58)।

राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान

गुलजारीलाल नंदा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विभिन्न आंदोलनों में शामिल हुए, विशेष रूप से श्रमिक सुधारों और सामाजिक न्याय से जुड़े विषयों पर उनका विशेष ध्यान था।

असहयोग आंदोलन (1920)

डॉ. गुलजारीलाल नंदा ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में श्रमिक आंदोलनों को मजबूती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी के सिद्धांतों से गहराई से प्रभावित होकर, नंदा ने सत्याग्रह और अहिंसा के मार्ग को अपनाया।[3] उन्होंने महसूस किया कि शांतिपूर्ण विरोध और नैतिक साहस के माध्यम से ही शोषण और अन्याय का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सकता है। गांधीजी के नेतृत्व में, नंदा ने श्रमिकों के अधिकारों की लड़ाई को न केवल एक सामाजिक मुद्दा माना, बल्कि इसे एक नैतिक संघर्ष के रूप में भी देखा (मेहता, 1985, पृ. 132)।

नंदा का गांधीजी के साथ सहयोग तब और महत्वपूर्ण हो गया जब उन्होंने श्रमिक वर्ग के हितों की रक्षा के लिए गांधीवादी सिद्धांतों का प्रयोग किया।[4] उन्होंने श्रमिक आंदोलनों को अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से संगठित किया, जिससे श्रमिकों के लिए बेहतर कामकाजी परिस्थितियाँ, उचित वेतन, और सामाजिक सुरक्षा की मांग की गई। नंदा ने गांधीजी के साथ मिलकर श्रमिकों के अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण आंदोलन किए, जिनका व्यापक प्रभाव हुआ और श्रमिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता मिली (कपूर, 1991, पृ. 145)। यह अनुभव डॉ. नंदा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसने उन्हें श्रमिक आंदोलनों में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी के साथ उनके सहयोग ने उन्हें राष्ट्रीय श्रम आयोग और अन्य प्रमुख श्रमिक संघों के आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित होकर, नंदा ने श्रमिकों के लिए शांतिपूर्ण और प्रभावी संघर्षों का नेतृत्व किया, जो उन्हें भारत के श्रमिक आंदोलन में एक प्रमुख नेता के रूप में स्थापित करता है (पटेल, 1989, पृ. 221)। गांधीजी के साथ इस सहयोग ने न केवल नंदा के राजनीतिक और सामाजिक जीवन को आकार दिया, बल्कि उन्हें श्रमिक वर्ग के लिए एक प्रभावी और सम्मानित नेता भी

[3] Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol. XII, p. 396, 22-3-1914.
[4] To A Gandhian Capitalist, XIII, pp. 17-18, 7-22-1915.

बनाया। उनका यह योगदान श्रमिक आंदोलनों में एक आदर्श के रूप में देखा जाता है, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधारों को एक नई दिशा दी (शर्मा, 1989, पृ. 78). गुलजारीलाल नंदा महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन से जुड़े। उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अहिंसक विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया और जनता को स्वदेशी अपनाने के लिए प्रेरित किया।

स्वतंत्र भारत में भूमिका और केंद्रीय मंत्री के रूप में योगदान

स्वतंत्रता के बाद, गुलजारीलाल नंदा को श्रम और रोजगार मंत्री बनाया गया। उन्होंने श्रमिकों के अधिकारों और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए कई सुधार किए। अंतरिम रूप से गुलजारीलाल नंदा भारत के कार्यवाहक प्रधानमंत्री के रूप में दो बार रहे थे । प्रथम बार 27 मई 1964 को जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद और दूसरी बार 11 जनवरी 1966 को लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद प्रधानमंत्री के रूप में अपना दायित्व संभाला था।[5]

निष्कर्ष

गुलजारीलाल नंदा एक सच्चे राष्ट्रसेवक, कर्मठ नेता और समाज सुधारक थे। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही और स्वतंत्र भारत में उन्होंने आर्थिक और सामाजिक सुधारों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका जीवन देशभक्ति, ईमानदारी और सेवा की मिसाल है। यह शोध पत्र उनके जीवन और राष्ट्रीय आंदोलन में उनके योगदान को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची (References)

1. गोपालकृष्ण, वी. (1992). *भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास.* नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
2. शर्मा, आर.के. (2001). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक.* जयपुर: राजस्थान प्रकाशन।
3. वर्मा, एस.पी. (2010). *भारतीय राजनीति के प्रमुख नेता.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. Biography of Gulzarilal Nanda, b. 1898, politician and freedom fighter of India.
5. October 27, 2009, Prime ministers of India 1967, Metropolitan Book Co. in English
6. नेहरू, जवाहरलाल (1946). *भारत की खोज (Discovery of India).* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
7. गांधी, महात्मा (1927). *सत्य के प्रयोग (My Experiments with Truth).* नवजीवन प्रकाशन।

[5] नेहरू, जवाहरलाल (1946). *भारत की खोज (Discovery of India).* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।

8. मिश्रा, लक्ष्मीनारायण (1985). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय नेता.* नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
9. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार – भारत सरकार (https://nationalarchives.nic.in/)
10. यादव, के.एल. (2004). *स्वतंत्रता संग्राम के महानायक: गुलजारीलाल नंदा.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
11. भारतीय संसद पुस्तकालय एवं अभिलेखागार (https://loksabha.nic.in/)
12. डॉ. रामचंद्र गुहा (2011). *भारत: गांधी से आज तक.* हार्पर कॉलिन्स पब्लिशिंग।
13. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार (https://www.indiaculture.gov.in/)